

ईमान के कितने स्तम्भ हैं, जिनके बिना मुसलमान का ईमान सही नहीं होता है ?

ईमान के स्तम्भ निम्नलिखित हैं :

अल्लाह पर ईमान : "इस बात का दृढ़ विश्वास कि अल्लाह हर चीज़ का रब एवं मालिक है। वही अकेला सृष्टिकर्ता है। वही इबादत, दीनता और अधीनता का अधिकारी है। वह पूर्णता की विशेषताओं से विशिष्ट है। हर कमी से पाक है। इन बातों पर प्रतिबद्धता हो एवं उनके अनुसार अमल किया जाए।" [70] "सियाज अल-अ़कीदह अल-ईमान बिल्लाह", अब्दुल अज़्जीज़ अल-राजिही,
पृष्ठ : 9

फ़रिश्तों पर ईमान : उनके अस्तित्व को सच मानना और इस बात पर विश्वास रखना कि वे नूर से बनी सृष्टि हैं, जो अल्लाह का अज्ञापालन करती है और उसकी अवज्ञा नहीं करती।

आकाशीय पुस्तकों पर ईमान : इसमें हर वह पुस्तक शामिल है, जिसे अल्लाह ने अपने रसूलों पर उतारा है। उनमें से एक पुस्तक तौरात है, जो मूसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गयी थी। दूसरी इंजील है, जो ईसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गई थी। तीसरी ज्बूर है, जो दाऊद -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गई थी। इसके अलावा मूसा एवं इब्राहीम -अलैहिमस्सलाम- के सहीफे भी हैं। [71] इसी तरह कुरआन, जो मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा गया था। इन पुस्तकों की मूल प्रतियों में एकेश्वरवाद का संदेश अर्थात् सृष्टिकर्ता पर ईमान और केवल उसी की इबातद करने का संदेश मौजूद था, मगर वो विकृति का शिकार हो गई, इसलिए कुरआन के उतरने एवं इस्लामी शरीयत के लागू होने के बाद इन्हें निरस्त कर दिया गया।

नबियों और रसूलों पर ईमान :

आखिरत के दिन पर ईमान : क़्यामत के दिन को सच मानना, जिस दिन अल्लाह लोगों को हिसाब-किताब एवं बदले के लिए उठाएगा।

निर्णय एवं तक़दीर पर ईमान : इस बात को सच मानना कि अल्लाह ने अपने पहले के ज्ञान एवं अपनी हिक्मत के अनुसार कायनात का पूरा अंदाज़ा लगा लिया था (और सबकी तक़दीर लिख दी थी)।

ईमान के बाद एहसान का दर्जा आता है। यह दीन का सबसे उच्च स्थान है। एहसान का अर्थ रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के इन शब्दों से स्पष्ट है : "एहसान का सारांश यह है कि आप अल्लाह की उपासना इस प्रकार करें कि मानो आप उसको देख रहे हैं। यदि यह कल्पना उत्पन्न न हो सके कि आप उसको देख रहे हैं, तो (यह स्मरण रखें कि) वह आपको अवश्य देख रहा है।" [72] हदीस-ए-जिबरील, इसे इमाम बुखारी (4777) ने तथा इमाम मुस्तिम (9) ने रिवायत किया है।

कामों को, आर्थिक बदला या इंसान से किसी धन्यवाद या प्रशंसा की आशा किए बिना केवल

अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए ठीक से करने तथा इस रास्ते में पूरी कोशिश करने को एहसान कहते हैं। इबादतों को इस तरीके पर अदा करना कि वो नवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार हों, अल्लाह की रजा हासिल करने के लिए हों और उसकी निकटता प्राप्त करने के इरादे से हों। अच्छे और अच्छी तरह काम करने वाले समाज के सफल रोल मॉडल होते हैं, जो दूसरों को भी उनकी तरह सिर्फ अल्लाह के लिए दीन या दुनियावी नेक कामों के करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी गिरोह के हाथों समाज विकसित होता है, आगे बढ़ता है, इंसानी जीवन आनंदमय होता है एवं देश तरक्की करता है और फलता-फूलता है।

इस्लाम - प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से

Source: <https://mawthuq.net/demo/qa/hi/show/23/>

Arabic Source: <https://mawthuq.net/demo/qa/ar/show/23/>

Friday 23rd of January 2026 08:10:16 PM